आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 9 अंक : 9 मई, 2022 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

पशु कल्याण के प्रति पशु चिकित्सक हमेशा रहे संकल्पबद्ध

विश्व पशुचिकित्सा दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई। भारत जैसे प्राचीन सभ्यता और संस्कृति वाले देश में पशु–पक्षियों को देवता तुल्य मानते हुए प्यार, करूणा और दया का भाव प्रत्येक देशवासी के मन–मस्तिष्क में है। मूक व निरीह प्राणियों की सेवा को एक पवित्र कार्य माना गया है। प्राचीन काल से ही मनुष्यों का सम्बन्ध पशुओं से रहा है तथा आदिकाल से ही मनुष्य अपने भोजन की पूर्ति हेतु पशुओं पर निर्भर रहा है। अतः पशु चाहे पालतु हो या आवारा, उन्हें प्यार और देखभाल की आवश्यकता होती है। इन्सानों के चिकित्सकों की भांति पशुओं के उपचार हेतु भी पशुचिकित्सक की आवश्यकता होती है। पशु स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता के साथ लोग धीरे–धीरे पशु चिकित्सकों के महत्व को समझें व दुनियाभर में पशु चिकित्सकों को प्रोत्साहित करने तथा जश्न मनाने के लिए प्रतिवर्ष अप्रैल के अन्तिम शनिवार को विश्व चिकित्सा दिवस के रूप में मनाया जाता है। वर्ष 1863 में प्रोफेसर जे.गैमी ने यूरोप के पशुचिकित्सकों को पशु स्वास्थ्य, विशेष रूप से जुनोटिक बीमारियों और उनकी रोकथाम के बारे में प्रथम सम्मेलन में भाग लेने हेतु आमन्त्रित किया। यह पहली अन्तर्राष्ट्रीय पशु चिकित्सा कांग्रेस थी। वर्ष 1959 में स्पेन में 15वीं अन्तर्राष्ट्रीय वेटरनरी कांग्रेस की बैठक में विश्व पशुचिकित्सा संघ की स्थापना की गई जिसका प्रमुख उद्देश्य पशुचिकित्सा विज्ञान के महत्व को सामने लाना और पशु स्वास्थ्य और कल्याण के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। वर्ष 2001 में विश्व पशुचिकित्सा संघ ने हर साल अप्रैल के अंतिम शनिवार को पशुचिकित्सा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। प्रत्येक वर्ष अलग–अलग थीम पर विश्व पशुचिकित्सा दिवस मनाया जाता है। वर्ष 2022 के विश्व पशुचिकित्सा दिवस का थीम – पशुचिकित्सा का सुदृढ़ीकरण करना था। अतः विश्व पशुचिकित्सा दिवस–2022 के अवसर पर पशुचिकित्सा क्षेत्र को अधिक लचीला परन्तु मजबूत बनाने के लिए पशुचिकित्सकों, पशुचिकित्सा संघो तथा अन्य सभी लोगों को प्रयास करने चांहिएं। वेटरनरी विश्वविद्यालय भी अपनी स्थापना के बाद से विश्व पशुचिकित्सा दिवस मनाता आ रहा है तथा बेहतर पशुचिकित्सा सेवाएं देकर पशु कल्याण के प्रति संकल्पबद्ध है। विश्वविद्यालय के बीकानेर, नवानियां (उदयपुर) एवं जयपुर स्थित परिसरों में अत्याधुनिक तकनीक से युक्त पशु क्लिनिक और एम्बुलेटरी सेवाएं प्रदान की जा रही है तथा इनका सुदृढ़ीकरण भी किया जा रहा है। इसके साथ–साथ विश्वविद्यालय राज्य को मानव संसाधनों के रूप में पशुचिकित्सक उपलब्ध करवा रहा है। राज्य के आधे से अधिक जिलों में प्रभावी चिकित्सा सेवाओं की जांच प्रयोगशालाएं, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किये गये हैं, जो कि गांव–ढ़ाणी के पशुपालकों को बेहतर सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। विश्व पशुचिकित्सा दिवस पर सभी पशुचिकित्सकों, पशुपालकों व अन्य सभी को पुनः शुभकामनाएं व बधाई।

पंचम् दीक्षान्त समारोह के अवसर पर सम्बोधित करते हुए माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र

प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

वेटरनरी विश्वविद्यालय में पांचवे दीक्षांत समारोह का आयोजन

पशुपालकों की आय बढ़ाने के लिए देशी गौवंश और गौ उत्पादों का प्रोत्साहन दिया जाना आवश्यक : राज्यपाल श्री कलराज मिश्र

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पंचम् दीक्षांत समारोह में 29 अप्रैल को पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के 423 छात्र–छात्राओं को उपाधियों और 35 को स्वर्ण पदक तथा 2 कुलाधिपति स्वर्ण पदक से अलंकृत किया गया। माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र ने समारोह में ऑनलाइन शिरकत करते हुए प्रदेश में देशी गौवंश की नस्लों के संरक्षण, संवर्द्धन और गौ आधारित उत्पादों के अनुसंधान एवं विकास को गति देने का आव्हान किया। उन्होंने कहा कि पशुपालकों की आय बढ़ाने के लिए जरूरी है कि देशी गौवंश पर होने वाले अनुसंधानों व विकास कार्यों का लाभ उन्हें मिलें। उन्होंने कहा कि गोमूत्र से कीटनाशक एवं गोबर से जैविक खाद् आदि के उत्पादन और इसके विपणन को प्रभावी बनाने की दिशा में पहल करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अंतिम छोर पर बैठे गांव, ढ़ाणी के किसान व पशुपालकों तक नवीनतम उन्नत वैज्ञानिक तकनीकों की जानकारी शीघ्र और सरल रूप से उपलब्ध कराने के लिए पशुधन अनुसंधान केन्द्रों और पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से अधिकाधिक प्रयास किए जाएं। राज्यपाल ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन आज भी किसानों की आय का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। कृषि पर आश्रित परिवार भी अनुपूरक आय के लिए पशुपालन पर निर्भर हैं। उन्होंने कहा कि फसल खराब होने पर तो गांवों में पशुधन ही आय का मुख्य स्त्रोत रह जाता है, इसलिए पशुपालकों को पशुधन से स्थायी आय प्राप्त हो सके, इस दिशा में प्रयास किए जाएं। इसके लिए उन्होंने पशुधन संरक्षण की तकनीकों में नवाचार और विकास का आव्हान किया। कुलाधिपति ने कहा कि भारत में वैदिक काल से ही गायों और पशुधन सम्पदा का विशेष महत्व रहा है। उन्होंने पशुधन से जुड़े प्राचीन ज्ञान पर आधुनिक संदर्भों में शोध और अनुसंधान को बढ़ावा देने का आव्हान किया। उन्होंने कहा कि पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान से जुड़े आधुनिक ज्ञान के साथ ही इसके प्राचीन और पारंपरिक ज्ञान विज्ञान से भी विद्यार्थियों को जोड़ा जाना चाहिए। समारोह के विशिष्ट अतिथि कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री लालचंद कटारियां ने कहा कि वर्तमान में पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के अधिकांश जिलों में पशुचिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं जो राज्य के किसानों और पशुपालकों के लिए उपयोगी और प्रेरणादायी सिद्ध हो रहे हैं। राज्य सरकार ने अपने बजट घोषणा में मलसीसर (झुन्झुनू), भरतपुर एवं कोटपुतली (जयपुर) में भी तीन नये वेटरनरी कॉलेज खोलने की घोषणा की है। दीक्षांत भाषण देते हुए केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के अध्यक्ष प्रो अनिल कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर जैसे प्रतिष्ठित संस्थान से शैक्षणिक योग्यता हासिल विद्यार्थियों के लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, उद्योग, बैंक, शैक्षणिक संस्थानों, प्रशासनिक और अनुसंधान के क्षेत्र में अनेकों अवसर उपलब्ध हैं। आप सबको "ग्लोरी ऑफ इंडिया" का हिस्सा बनना है। जलवायु परिवर्तन के साथ पशुधन स्वास्थ्य के क्षेत्र में नई चुनौतियां हमारे सामने है। जिसके लिए पशुचिकित्सा स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार की जरूरत है। पशुपालकों में जागरूकता और रोगरोधी टीकाकरण, रोग निदान सेवाओं के सुदृढ़ीकरण में हमारी महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालय में उद्यमिता विकास और देशी गौवंश संवर्द्धन के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि विकास और अनुसंधान परियोजनाओं में अच्छा कार्य हो रहा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति सतीश के. गर्ग ने अतिथियों का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2022–23 की बजट घोषणा में तीन नए संघटक महाविद्यालय खोले जाने के पश्चात राजुवास भारतवर्ष का सबसे बड़ा प्रादेशिक पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय होने का गौरव भी प्राप्त कर लेगा। विशिष्ट अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक (कृषि शिक्षा) डॉ. राकेश चन्द्र अग्रवाल ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के अल्प काल में ढांचागत विकास के साथ नए पशुचिकित्सा महाविद्यालय खोलने और विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक कार्यक्रम प्रारंभ कर शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए हैं। पशुधन अनुसंधान केन्द्रों और पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से किसान और पशुपालकों तक तकनीकी हस्तांतरण और आवश्यकता आधारित अनुसंधान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हो रहा है। समारोह में राज्यपाल के प्रमुख सचिव श्री सुबीर कुमार, विश्वविद्यालय के प्रबंध मंडल के सदस्य प्रो. ए.के. गहलोत, प्रो. पी.के. शुक्ला (मथुरा), डॉ. अमित नैन, श्री अशोक मोदी, श्री पुरखराराम, श्रीमती कृष्णा सोलंकी एवं अकादमिक परिषद सदस्यगण, बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अम्बरिश विद्यार्थी, आई.सी.ए.आर. संस्थानों के निदेशक व वैज्ञानिकगण, विश्वविद्यालय के डीन, डायरेक्टर, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र–छात्राएं और अतिथि उपस्थित थे। दीक्षांत समारोह में स्नातक योग्यता प्राप्त कर लेने वाले 217 छात्र–छात्राओं को उपाधियां, स्नातकोत्तर स्तर के 167 को उपाधियां तथा 39 को विद्यावाचस्पति उपाधियां प्रदान की गई। 35 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदकों से और स्नातकोत्तर शिक्षा में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर अनामिका शर्मा व कुंदनमल यादव को कुलाधिपति स्वर्ण पदक से अलंकृत किया गया।

पशुओं, वन्यजीवों, जंगल एवं वातावरण का संरक्षण हमारा संवैधानिक कर्तव्य : माननीय न्यायाधीश दिनेश महेश्वरी

सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली, भारत सरकार के न्यायाधीश माननीय श्री दिनेश महेश्वरी ने वेटरनरी विश्वविद्यालय का दौरा किया तथा पशुचिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षण, अनुसंधान एवं प्रसार के कार्यों की जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर उच्च न्यायालय, जोधपुर के न्यायाधीश माननीय श्री विजय बिश्नोई मौजूद रहे। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में 10 अप्रैल को एक इन्टरेक्टिव मीटिंग का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने मीटिंग में विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार गतिविधियों की विस्तृत जानकारी प्रदान की और कहा कि विश्वविद्यालय राज्य में पशुचिकित्सा सेवा, गौ संरक्षण एवं सवंर्द्धन, पशुपालक प्रशिक्षण एवं कौशल विकास एवं इन्टर्प्रन्यूरशिप के क्षेत्र में अपने महाविद्यालयों, पशु अनुसंधान केन्द्रों एवं पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान कर रहा है। माननीय न्यायाधीश श्री दिनेश महेश्वरी ने विश्वविद्यालय के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय राज्य में पशुपालकों के हितों एवं पशुचिकित्सा के क्षेत्र में एक वरदान के रूप में है तथा विश्वविद्यालय को निरंतर नई योजनाओं के माध्यम से पशुपालक हितार्थ कार्य करने चाहिए। भारतीय संविधान में भी वन्यजीव, जंगल एवं वातावरण संरक्षण हेतु विभिन्न प्रावधान है। पशुचिकित्सा के साथ–साथ विश्वविद्यालय इनके सरक्षंण हेतु कार्य योजना बनाये ताकि समस्त मानव जाति का कल्याण हो सके। श्री विजय बिश्नोई, माननीय न्यायाधीश, जोधपुर उच्च न्यायालय ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य में पशुपालन ज्यादातर ग्रामीणों की आजीविका का मुख्य हिस्सा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय राज्य के अधिकांश हिस्सों में पशुचिकित्सा, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान सेवाएं दे रहा है जो कि पशुपालकों के हितार्थ उल्लेखनीय कार्य है। विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बैठक में पशुचिकित्सा क्षेत्र में उपयोग होने वाले विभिन्न कानूनी प्रावधानों, पशुजन्य उत्पादों की मांग, एकल स्वास्थ्य मिशन एवं पशुपालकों हेतु विश्वविद्यालय की विभिन्न कार्य योजनाओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर जिला न्यायाधीश श्री प्रमिल कुमार माथुर, विश्वविद्यालय के वित्त नियंत्रक डॉ. प्रताप सिंह पूनिया सहित डीन–डायरेक्टर, शिक्षक एवं विभागाध्यक्ष मौजूद रहे।

वेटरनरी विश्वविद्यालय का रेडक्रॉस सोसाइटी से एम.ओ.यू.

वेटरनरी विश्वविद्यालय एवं रेडक्रॉस सोसाइटी, दिल्ली व उसकी राजस्थान शाखा के मध्य आपसी करार (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर हुए। कुलाधिपति व राज्यपाल श्री कलराज मिश्र की उपस्थिति में राजभवन, जयपुर के सभागार में कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने इस एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किये। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने बताया कि इस एम.ओ.यू. के तहत विश्वविद्यालय एवं रेडक्रॉस सोसाइटी के द्वारा संयुक्त रूप से विभिन्न मानवीय पहलुओं को ध्यान में रखते हुए आपदा प्रबंधन, पर्यावरण, स्वच्छता, जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य सेवाओं एवं रक्तदान आदि विषयों पर प्रशिक्षण, जागरूकता, शोध एवं प्रसार कार्यों का क्रियान्वयन किया जायेगा ताकि ज्यादा से ज्यादा मानव कल्याण एवं उत्थान को अंजाम दिया जा सके। यह आपसी करार तीन वर्षो तक प्रभावी रहेगा। इस कार्यक्रम के दौरान अन्य विश्वविद्यालय के कुलपतिगण, राज्यपाल के प्रमुख सचिव सुबीर कुमार, विशेषाधिकारी गोविन्द राम जायसवाल और रेडक्रॉस सोसाइटी के अधिकारी उपस्थित रहे।

किसान मेला एवं सह कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़–II) द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, अटारी, जोधपुर के निर्देशानुसार आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के अन्तर्गत किसान मेला एवं सह कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंचायत समिति प्रधान सोहन ढिल ने कहा कि खेती में बढ़ती लागत और प्रतिस्पर्धा के दौर में कभी मौसम की मार तो कभी नहरों में पर्याप्त पानी की कमी से फायदे की बजाय घाटे का सौदा हो गया है। इसलिए इस क्षेत्र में बागवानी के प्रति किसानों को जागरूक होना होगा। हमें इसके लिए खेती की लागत को कम करने के लिए प्राकृतिक खेती की तरफ लौटना होगा। उपनिदेशक बलवीर सिंह खाती कहा कि ने कम पानी और बढ़ते खर्चो के कारण खेती करना मंहगा हो गया है इसके लिए इस बारानी क्षेत्र में खजूर व अन्य मरूस्थलीय पौधों से अधिक आय प्राप्त की जा सकती है। कार्यक्रम में विद्यायक प्रतिनिधि सुभाष इन्दौरिया, कृषि अधिकारी द्वारका प्रसाद, हनुमानगढ़ जिला परिषद् सदस्य दीपचंद बेनीवाल व रामकुमार सैनी, उप प्रधान पंचायत समिति, नोहर, प्रगतिशील किसान लालसिंह सहित कृषि विभाग के अधिकारियों ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के प्रभारी अधिकारी डॉ. मनोहर सैन ने कृषि विज्ञान केन्द्र के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा मेले में पधारे सभी अतिथिगणों व किसान भाइयों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी का किसानों ने लाभ उठाया।

अकादमिक परिषद् एवं प्रबंध मण्डल की बैठक का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय की 21वीं अकादमिक परिषद् एवं 26वीं प्रबंध मण्डल की अलग–अलग बैठक 28 अप्रैल को कुलपति प्रो. सतीश के गर्ग की अध्यक्षता में कुलपति सचिवालय में आयोजित की गई। बैठक में पंचम् दीक्षांत समारोह में प्रदान की जाने वाली उपाधियों एवं स्वर्ण पदक, कुलाधिपति स्वर्ण पदक, रजत एवं कांस्य पदकों का सदस्यों द्वारा अनुमोदन किया गया। बैठक में विश्वविद्यालय के नवीन भर्तियों हेतु विषय विशेषज्ञों के पैनल के साथ–साथ गत अकादमिक बैठक के विभिन्न मुद्दों का अनुमोदन भी किया गया। बैठक में 29 अप्रेल को आयोजित होने वाले दीक्षांत समारोह की तैयारियों एवं कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में भी परिषद् एवं बोम के सदस्यों को अवगत करवाया गया। बैठक में प्रबंध मण्डल के सदस्य प्रो. ए.के. गहलोत, प्रो. पी.के. शुक्ला (मथुरा), डॉ. अमित नैण, श्री पुरखराराम, श्री रणजीत सिंह, श्रीमती कृष्णा सोलंकी, विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. आर.के. सिंह, वित्त नियन्त्रक डॉ. प्रतापसिंह पूनिया अकादमिक परिषद् के सदस्य डॉ. संजय कुमार शर्मा (पंतनगर), डॉ. उदयवीर सिंह चहल (लुधियाना), संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग डॉ. विरेन्द्र नेत्रा, अतिरिक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, बीकानेर डॉ. हुक्माराम सहित डीन–डॉयरेक्टर और अधिकारी उपस्थित थे।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढ़वाला में एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन

विश्वविद्यालय के यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला में दिनांक 27 अप्रेल को महिला एवं बाल विकास विभाग, बीकानेर के समन्वयन में प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर द्वारा समेकित बाल विकास कार्य योजना पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में महिला एवं बाल विकास विभाग की पर्यवेक्षक श्रीमती विमला भाटिया ने महिलाओं को एनिमिया, कु–कौशल टीकाकरण, डि–वार्मिंग आदि के बारे में प्रेरित एवं जागरूक किया। डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने सम्बोधित करते हुए महिला एवं बच्चों के स्वास्थ्य एवं कौशल पहलु के बारे में बताया। संगोष्ठी के दौरान बड़ी संख्या विभिन्न आयु वर्ग की महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया था

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मई, 2022

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
बबेसिओसिस	गाय	सीकर	–	–	–
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	जोधपुर	–	झुंझुनू	–
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	अजमेर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, पाली
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	भरतपुर	–	–	–
खुरपका–मुंहपका	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	हनुमानगढ़	–	–	अजमेर, अलवर, भरतपुर, चितौडगढ़, धोलपुर, गंगानगर, जयपुर, झालावाड़, प्रतापगढ़, उदयपुर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	अलवर, गंगानगर, जयपुर, कोटा, टोंक	–	–	अजमेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, दौसा, धोलपुर, जैसलमेर, झालावाड़, झुंझुनू, करौली, नागौर, सवाई माधोपुर, सीकर, उदयपुर
पी.पी.आर.	बकरी	सवाई माधोपुर, उदयपुर	जयपुर	जैसलमेर	अजमेर, अलवर, बारां, भरतपुर, बूंदी, चित्तौडगढ, दौसा, धोलपुर, जैसलमेर, झालावाड़, झुंझुनू, करौली, कोटा, नागौर, प्रतापगढ़, राजसमन्द, सीकर, टोंक
स्वाइन फीवर	सूकर	जयपुर, कोटा	–	–	–
ट्रीपनोसोमियोसिस	ऊँट, गाय, भैंस	सीकर	–	–	–

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं. 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 8, 13, 19, 23, 27 एवं 30 अप्रैल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 187 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 7, 11, 13, 16, 18, 20 एवं 23 अप्रैल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 298 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 7, 12, 19, 22 एवं 26 अप्रैल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 153 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 26 एवं 27 अप्रैल को गांव बिलावती एवं सिकोरी में आयोजित एक दिवसीय आफॅलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 39 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 6, 8, 11, 13, 19, 23 एवं 30 अप्रैल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 194 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 8, 13, 21 एवं 23 अप्रैल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 149 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 8, 12, 19, 22, 26 एवं 29 अप्रैल को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 249 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 12, 13, 16, 18 एवं 19 अप्रैल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 124 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 6 एवं 19 अप्रैल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 55 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 8, 12, 19, 21 एवं 26 अप्रैल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 166 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 7, 9, 11 एवं 13 अप्रैल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 111 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 7, 18, 19, 21, 23 एव 25 अप्रैल को विचार गोष्टी, कृषक वैज्ञानिक संवाद, तकनीकी हस्तांतरण एवं जागरूकता शिविरों से 161 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 20, 21, 27, 28 एवं 29 अप्रैल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 116 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 12, 19, 20, 23 एवं 27 अप्रैल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 109 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा दिनांक 12–13 अप्रैल को गांव दीपलाना में आयोजित दो दिवसीय कृषक पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 30 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए करे ये उपाय

सामान्यतः पशुपालक यह सवाल करते हैं कि पशु के दूध की मात्रा कैसे बढ़ाएं। पशु से दूध की उत्पादकता अनेकों कारकों पर निर्भर करती है जिन्हें समझ कर पशुपालक बड़ी आसानी से अपने पशु की दूध की मात्रा बढ़ा सकते हैं। पशु के दूध उत्पादन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में पशु प्रजनन, आहार प्रबंधन, पशु प्रबंधन व स्वास्थ्य रक्षा है।

पशु प्रजनन : एक सफल पशुपालन व्यवस्था के लिए पशु प्रजनन अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि पशुशाला के अधिकाधिक पशु समयानुसार गर्भित होकर सामान्य व स्वस्थ बच्चे को जन्म देते रहे तभी दूध उत्पादन का क्रम लगातार चलता रह सकता है। प्रजनन क्षमता में कमी से पशु दुग्ध उत्पादन पर विपरित प्रभाव पड़ता है। लाभकारी पशुपालन के लिए पशुपालक सदैव अधिक उत्पादन क्षमता वाले स्थानीय पशुओं का चयन करें व उच्च गुणों वाली संतति के विकास पर ध्यान देंवे। यौवनावस्था के पश्चात् मादा पशु एक निश्चित अंतराल पर मदकाल में आता है जिसमें पशु विशेष लक्षणों को प्रदर्शित करता है। मदकाल में पशु को कृत्रिम या प्राकृतिक रूप से गर्भाधान करवाना चाहिए। एक निरन्तर प्रजनन चक्र के लिए पशु का प्रसव के पश्चात् 60 दिन में पुनः मदकाल में आना आवश्यक है। प्रजनन सम्बन्धित किसी भी असामान्य लक्षणों के ईलाज हेतु पशु चिकित्सक की सलाह लें।

पशु आहार प्रबंधन : पशु से अधिकतम दूध उत्पादन प्राप्त करने में पशु आहार का भी महत्वपूर्ण प्रभाव है। पशु के जन्म पश्चात् ही उसे खींस खिलाना चाहिए साथ ही पशु को पर्याप्त मात्रा में हरा चारा व दाना मिश्रण देकर उचित समय पर प्रजनन के लिए तैयार किया जा सकता है। पशु को सदैव शारीरिक वजन, वृद्धि व उत्पादन स्तर के अनुसार ही संतुलित आहार देना चाहिए। संतुलित आहार सूखे चारे, हरे चारे, दाने, खल, खनिज व नमक का एक ऐसा मिश्रण होता है जिसमें पशु को स्वस्थ रखने, वृद्धि व उत्पादन के लिए आवश्यक पोषक तत्व एक निश्चित मात्रा एवं अनुपात में उपलब्ध होते हैं। पशु को दूध की मात्रा के अनुसार दाना मिश्रण देना चाहिए। सामान्यतः गाय को 2.5 किलो दूध पर व भैंस को 2 किलो दूध पर 1 किलो दाना मिश्रण देते हैं। पशु को सदैव ताजा पानी उपलब्ध रहना चाहिए।

पशु प्रबंधन : पशु आवास हवादार, स्वच्छ व पशु की विपरित वातावरणीय परिस्थितियों से सरुक्षा प्रदान करने वाले होने चाहिए। पशु आवास के आसपास छायादार वृक्ष होने चाहिए। पशुओं की उम्र के अनुसार पृथक–पृथक आवास में रखना चाहिए। नए पशु, दुधारू पशु व बच्चों को अलग से पृथक आवास में रखें। पशु के दुहने की उचित विधि द्वारा दुग्ध दोहन किया जाना चाहिए व एक निश्चित व्यक्ति निश्चित व्यक्ति द्वारा निश्चित समयन्तराल पर दुग्ध दोहन करना चाहिए। पशु को दुहते समय पूरे हाथ से थन को दबाकर दूध निकालना चाहिए। अंगूठा मोड़कर दूध दुहना थनैला रोग की संभावना को बढ़ाता है। छोटे थनों वाले पशु में खुले अंगूठे व अंगुलियों की सहायता से दूध निकालना चाहिए।

पशु स्वास्थ्य रक्षा : एक स्वस्थ पशु ही अपनी अधिकतम क्षमता से दूध उत्पादन कर सकता है कुछ विशेष बातों का ध्यान रखकर पशुपालक अपने पशुओं की स्वास्थ्य रक्षा आसानी से कर सकते हैं। रोग के प्रारम्भिक लक्षण दिखते ही रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग कर देंवे। रोगी पशु के आहार की व्यवस्था अलग से करें। रोगी पशु के उपचार के साथ–साथ पशु चिकित्सक की सलाह से अन्य स्वस्थ पशुओं का टीकाकरण करायें। रोग ग्रस्त क्षेत्र में पशुओं का परिवहन नहीं करें। स्वस्थ पशु का दूध निकाले तत्पश्चात् ही रोगी पशु का दूध निकालें। रोगी पशु का दूध निकालने के बाद हाथ, बर्तन आदि को एन्टीसेप्टीक घोल जैसे लाल दवा, डिटोल आदि से साफ करें। रोगी पशु के उपचार हेतु पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें। कीटनाशक घोल या पाऊडर (डी.डी.टी., बी.एच.सी., मैलेथियॉन आदि) को पशु के शरीर पर पशु चिकित्सक की सलाह से लगाना चाहिए। बाह्य व अन्य परजीवियों से सुरक्षा हेतु पशु को वर्ष में तीन बार कृमिनाशक दवा देंवे। संक्रमक रोग से मृत पशु को लगभग 1.5 मीटर गहरे गड्ढे में चूने या नमक के साथ दबा देंवे। मृत पशु के सम्पर्क में रही वस्तुओं व स्थान को एन्टीसेप्टीक घोल से साफ करें।

मंगेश कुमार, डॉ. जयेश व्यास, डॉ. नरेन्द्र सिंह
टीचिंग एसोसिएट, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुओं को आन्तरिक परजीवियों के नुकसान से बचाएं

परजीवी पशुओ के शरीर के अंदर विभिन्न भागों एवं अंगो में तथा शरीर की त्वचा पर जीवन की पूर्ण या अपूर्ण अवधि तक रहकर अपना जीवन निर्वाह करते है तथा विकसित होते है। पशुओं में परजीवी मुख्यतया दो प्रकार के होते है : बाह्म परजीवी एवं आन्तरिक परजीवी। ये परजीवी पशुओ में विभिन्न प्रकार के रोग व हानियाँ पैदा करते है, लेकिन स्वयं हमेशा लाभ अर्जित करते रहते है। पशुओ को सन्तुलित आहार न मिलने की वजह से वे जमीन पर पड़े घास पत्तो आदि को खाते है, पशु रेत भी चाटता है जिससे उनके पेट में आन्तरिक कृमि पैदा हो जाते है। ये आन्तरिक परजीवी पशु शरीर से पचे हुए पदार्थो व खून को चूसते है, इससे पशु दुबला होता जाता है। खून की कमी भी हो जाती है। कभी–कभी पतले दस्त लगते है। प्रायः यह देखा गया है कि बीमारियों के कारण होने वाली कुल उत्पादन हानि का लगभग 80 प्रतिशत परजीवियों के कारण होता है। आन्तरिक परजीवी पशु शरीर के अन्दर रहकर हानि पहुँचाते है तथा एक कोशिकीय एवं बहुकोशिकीय प्रकार के होते है। एक कोशिकीय आन्तरिक परजीवीयों में मुख्यतया पाचन संस्थान में कोकसिडिया व जीआरडिया आदि, रक्त में थाइलेरिया, बबेसिया, एनाप्लाजमा व ट्रिपेनोसोमा आदि, जनन तन्त्र में ट्राइकोमोनाज पाये जाते है। बहुकोशिकीय आन्तरिक परजीवीयों में पत्ताकार चपटे कृमि जैसे लीवर फ्लूक, रूमेन फ्लूक, रक्त फ्लूक, फीताकृमि जैसे मोनिजिया, टीनीया, स्टीलेशिया आदि होते है। गोल कृमि में एसकेरिस, ट्राइक्यूरिस, स्ट्रोगाइलस, फुसफुस कृमि, फाइलेरिया आदि पाये जाते है।

आन्तरिक परजीवियो के लक्षण :–

पशु के भोजन में कमी एवं विरक्ति, भूख बन्द हो जाना, पशु का दिन प्रतिदिन दुबला होना, पशु का सुस्त व कमजोर हो जाना, ज्वर होना, रक्त अल्पता, कब्ज या दस्त होना, आगे के पैरो व शरीर के निचले हिस्सों में या दोनो जबडों के मध्य सूजन आना, मादा पशु का ताव में नही आना, ग्याभिन न हो पाना, गर्भपात होना, पेट दर्द या मरोड़ के कारण पैर पटकना, गोबर में बदबू आना, मूत्र में परिवर्तन होना, चक्कर आना, दीवार में सिर रगड़ना या मारना, गोल चक्कर खाकर गिर जाना, चमडी या नाक में से खून का बहना, कार्य क्षमता एवं उत्पादन में कमी आन्तरिक परजीवी प्रकोप के प्रमुख लक्षण है।

आन्तरिक परजीवियो से बचाव :

पशुओं को आन्तरिक परजीवियो के प्रकोप से बचाने के लिये निम्नानुसार उपाय करते रहना चाहिये।

- ❖ पशुशाला में ठाण को साफ–स्वच्छ एवं हवादार रखना चाहिये।
- ❖ पशुशाला में धूप पर्याप्त मात्रा में पहुँचनी चाहिये ताकि स्थान सदैव सूखा रहे।
- ❖ पशुशाला में गोबर व मूत्र की निकासी हेतु उचित व्यवस्था होनी चाहिये।
- ❖ पशुओं के शरीर की बराबर सफाई करते रहना चाहिये।
- ❖ गन्दे पानी, ठहरे हुए पानी के पोखर आदि से पशु को पानी नही पीने देना चाहिये एवं जहाँ तक संभव हो साफ पानी जैसे कुए या हेन्ड पम्प का पिलाना चाहिये।
- ❖ पशु को दिन में दो बार भरपेट साफ पानी अवश्य पिलाये अन्यथा पशु शरीर में पानी की कमी हो सकती है।
- ❖ पानी साफ होना चाहिये, गन्दा पानी पिलाने से पशु के पेट में कीड़े हो जाते है, जिससे पशु की भोजन को पचाने की क्षमता कम हो जाती है।
- ❖ पोखर एवं गड्ढो के आसपास चराई नही करवानी चाहिये।
- ❖ चरागाह के आसपास पाये जाने वाले पोखर एवं गड्ढो में कॉपर सल्फेट एक ग्राम 50 लीटर पानी के हिसाब से वर्षा के बाद या वर्ष में दो बार डालने से पानी से फैलने वाले परजीवी रोगों से बचाव संभव है।
- ❖ पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार वर्ष में दो बार कृमिनाशक दवाईयां पशु शरीर के अनुपात अनुसार देनी चाहिये।
- ❖ गोबर व रक्त की जाँच समय समय पर करवाते रहने से परजीवियो के प्रकोप की प्रारम्भिक अवस्था में ही निदान संभव है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

शुष्क क्षेत्र में मारवाड़ी नस्ल की बकरी का पालन

बकरी को लोकप्रिय रूप से गरीब की गाय कहा जाता है क्योंकि बकरी पालन ग्रामीण क्षेत्रों में आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए एक बड़ी आर्थिक सहायता का स्त्रोत है। बकरी की मारवाड़ी नस्ल थार रेगिस्तान के भौगोलिक क्षेत्र के अनुकूल नस्ल है। यह नस्ल राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में और पड़ोसी राज्य गुजरात व मध्यप्रदेश में पाई जाती है। नस्ल का नाम राजस्थान के ''मारवाड़'' क्षेत्र के नाम पर पड़ा है, जो कि इसका प्राकृतिक आवास है जिसमें जोधपुर, पाली, नागौर, बीकानेर, जालोर, जैसलमेर और बाड़मेर जिले शामिल है। मारवाड़ी बकरी को छोटे और बड़े दोनों झुंडों में पाला जाता है, मारवाड़ी बकरियों के बड़े झुंड मार्च–अप्रेल में अपने सुस्थापित मार्गो से कई दिशाओं में पलायन करना शुरू कर देते हैं और वे आमतौर पर जुलाई में वापस लौटते हैं।

मारवाड़ी बकरी की विशेषताएं :

- मारवाड़ी बकरियां मध्यम आकार के जानवर हैं जो मुख्य रूप से काले रंग की होती हैं लेकिन भूरे और सफेद निशान वाली बकरियां भी पाई जाती है।
- इनके बाल लंबे (10–12 सेमी.) होते हैं। एक बकरी से वर्ष में औसतन 300 ग्राम बाल प्राप्त होते हैं।
- इनके कान लंबे और झुके हुए होते हैं।
- वयस्क मादा बकरी का औसतन वजन 25 किग्रा एवं नर बकरे का वजन 35 किग्रा होता है।
- नर और मादा दोनों में मध्यम लम्बाई के सींग होते हैं।

उपयोग:

- मारवाड़ी एक परिपक्वता आयु जल्दी प्राप्त करने वाली नस्ल है क्योंकि यौवन की औसत आयु 306 दिन है।
- यह एक ट्रिपल प्रयोजन बकरी की नस्ल है, जो मांस, दूध और बालो के लिए पाली जाती है।
- मारवाड़ी बकरियां बहुत कठोर और मजबूत जानवर है। यह थार रेगिस्तान के कठोर वातावरण के अनुकूल है।
- इनकी रोग प्रतिरोधक शक्ति और बहुत कठोर पोषण स्थितियों में अच्छी तरह अनुकूलन क्षमता के लिए जानी जाती है।
- मारवाड़ी बकरी में मुख्य रूप से एकल जन्म होता है, जिसमें जुड़वा लगभग 10 प्रतिशत होती है।
- यह गर्म और ठंडे मौसम सहनशीलता के लिए जाने जाते हैं।

डॉ. निष्ठा यादव, डॉ. मंजू नेहरा, डॉ. प्रकाश
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

गोपालन से आर्थिक समृद्धि की ओर अग्रसर हुए दयाराम गुर्जर

कोटा जिले के ग्राम –नगपुरा के प्रगतिशील एवं जागरूक पशुपालक श्री दयाराम गुर्जर कृषि एवं पशुपालन का उचित सामंजस्य बनाकर तथा पशुपालन को व्यवसाय के साथ अपनाकर सामाजिक व आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना रहे हैं। दयाराम के पास 10 बीघा खेती की जमीन है। दुग्ध व्यवसाय से अपने आस–पास के क्षेत्र के गॉवों में भी लोगों में काफी पहचान बना रखी है। चार वर्ष पूर्व जब ये पशु विज्ञान केंद्र, कोटा के सम्पर्क में आये थे तब इनके पास दो गायें थी तथा वर्तमान में इनके पास छोटे–बड़े कुल 20 पशु है जिनमें 12 संकर नस्ल की गायें हैं बाकि छोटे बड़े बछड़ा–बछड़ियां हैं। वर्तमान में 80 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादित हो रहा है। इनकी गायें लगभग 10–15 लीटर दूध प्रतिदिन देती है पशुपालन के कार्यो में सहयोग हेतु इन्होंने दो लोगों को रोजगार भी दे रखा है। ये पशुओं को खुरपका– मुहंपका, गलघोंटू आदि संक्रामक बीमारियों का टीकाकरण वर्ष में दो बार करवाते हैं। उन्नत पशुपालन तकनीकों जैसे कृमिनाशक दवा का उचित उपयोग, खनिज लवण मिश्रण व केल्शियम आदि तकनीकों को अपना रखा है। इनको डेयरी से सालाना आय लगभग तीन लाख रूपये है। श्री दयाराम गुर्जर, पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा समय–समय पर उचित परामर्श एवं आवश्यक जानकारी प्राप्त करते हैं। ये अपने खेत में तीन बीघा में तो हरा चारा एवं बाकि में दलहन फसले करते हैं, जो इनके पशुओं के काम आती हैं। इनके मन में पशुपालन सम्बंधी ज्ञान अर्जित करने की जिज्ञासा हमेशा रहती है, साथ ही पहले से ही पशुपालन व डेयरी व्यवसाय के क्षेत्र में कार्य करने की इच्छा थी। पशु विज्ञान केंद्र, कोटा के वैज्ञानिकों के द्वारा समय–समय पर पशुपालन के नए आयाम तथा उन्नत पशुपालन तकनीकों जैसे हरे चारे का साईलेज बनाना, अजोला उत्पादन, वर्मी कम्पोस्ट व संतुलित पशु आहार एवं मोबाइल के माध्यम से विभिन्न पशुपालन गतिविधियों की जानकारी दी जाती है। श्री दयाराम गुर्जर पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा से निरन्तर सम्पर्क में रहते हैं।

सम्पर्क–दयाराम गुर्जर, ग्राम–नगपुरा, तह.–लाडपुरा जिला–कोटा (मो–9784671897)

निदेशक की कलम से...

पशुओं से अधिक उत्पादन के लिए संतुलित आहार जरूरी

पशुपालन में पशुपोषण सबसे महत्वपूर्ण अंग है किसी भी पशुधन से अधिकतम उत्पादन प्राप्ति हेतु संतुलित आहार का विशेष महत्व है। पशुपालक का 70 प्रतिशत केवल पशु की आहार व्यवस्था पर ही व्यय होता है। अतः सस्ता व संतुलित आहार इस व्यवसाय का मुख्य आधार है। भारत में जुगाली करने वाले पशुओं का आहार निम्न श्रेणी के चारे से मिलकर बना होता है। इसके अतिरिक्त किसान/पशुपालक अपने पशुओं को स्थानीय रूप से उपलब्ध दाने और खल दूध उत्पादन के अनुसार खिलाते हैं परन्तु पशुपालक पशु की आवश्यकता का ध्यान नहीं रखते हैं, इस प्रकार आहार में पशुओं को प्रोटीन, ऊर्जा, खनिज लवण, विटामिन आदि की आवश्कता की पूर्ति नहीं हो पाती है फलस्वरूप मवेशी अपनी क्षमता के अनुसार उत्पादन नहीं दे पाते हैं। संतुलित आहार नहीं देने पर पशुओं में कई पोषक तत्वों की कमी के कारण वृद्धि दर में कमी, परिपक्वता में देरी, समय पर हीट में नहीं आना, दो ब्यातों के बीच अन्तर अधिक होना, प्रजनन में कमी आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अतः पशुओं को आवश्यकतानुसार संतुलित आहार देना बहुत जरूरी होता है। पशुओं के आहार में सभी आवश्यक पोषक तत्व जैसे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन व खनिज लवण उचित मात्रा व अनुपात में होने चाहिए जो पशुओं की बढ़वार, स्वास्थ्य, प्रजनन आदि को बनाये रखने में सहायक होते हैं। विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ भिन्न–भिन्न प्रकार के पोषक तत्वों से युक्त होते हैं। विभिन्न प्रकार के दाने, चोकर, खल, कृषि औद्योगिक सह उत्पाद, खनिज पदार्थ तथा विटामिन उपयुक्त अंश में मिलाकर पशुओं के मुख्य आहार के साथ मिलाकर खिलाना चाहिए ताकि पशुओं की पोषक तत्वों की आवश्यकता भली भांति पूरी की जा सके। खाद्य पदार्थों का यह संतुलित आहार पशुओं की पोषक तत्वों की आवश्यकता, जलवायु आदि को ध्यान में रखकर बनाया जाना चाहिए। पशुओं की आहार की मात्रा पशु की उत्पादकता व प्रजनन की अवस्था पर निर्भर करती है पशु को कुल आहार का दो तिहाई भाग मोटा चारा तथा एक तिहाई भाग दाना मिश्रण हरा चारा खिलाना चाहिए। मोटे चारे के रूप में दलहनी तथा गैर दलहनी चारे का मिश्रण देना चाहिए। जीवन निर्वाह के लिए देशी गायों को तुड़ी अथवा सूखे घास की मात्रा 4 किलो तथा संकर गाय के लिए 4 से 6 किलो होनी चाहिए इसके अलावा पशु को दाना मिश्रण देशी गाय के लिए 1–1.25 किलो तथा संकर गाय के लिए 2 किलो खिलाना चाहिए। गर्भावस्था तथा दूध उत्पादन के समय तुडी व दाना मिश्रण की मात्रा आवश्यकतानुसार बढ़ा देनी चाहिए। पशु को साफ पानी दिन में कम से कम तीन बार जरूर पिलाना चाहिए तथा उचित मात्रा में खनिज लवण व विटामिन्स भी आहार में देने चाहिए। अतः पशुओं को स्वस्थ एवं उत्पादनशीलता बनाए रखने हेतु उन्हें उचित मात्रा में संतुलित आहार देना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया